AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

दलित साहित्य में प्रेमचंद की मुख्य भूमिका

Harsh Vardhan
Research Scholar
Department of Hindi
Singhania university ,
Pacheri Bari , Jhunjhunu , Rajasthan
Prof. (Dr) Tej Narayan Ojha
Supervisor
Department of Hindi
Maharaja Agrasen College
University of Delhi

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY MEFORPUBLICATION INTHE JOURNALIS COMPLETELY MYOWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BELEGALLYRESPONSIBLE.IFANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE.FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITYON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, ISHALL BELEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THISPAPER/ARTICLE

सार

यह निबंध एक उभरते हुए दलित साहित्यिक आलोचनात्मक प्रवचन में बीसवीं सदी के प्रतिष्ठित हिंदी लेखक मुंशी प्रेमचंद की केंद्रीयता पर विचार करता है। यह जांच करता है कि प्रेमचंद एक विलक्षण शक्तिशाली सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में कैसे उभरा है जिसके चारों ओर दलित साहित्यिक और राजनीतिक पहचान का गठन किया गया है। यह मुख्यतः प्रेमचंद के लेखन की आलोचना के माध्यम से है कि दलित लेखक और आलोचक हिंदी साहित्यिक क्षेत्र की मुख्यधारा में हस्तक्षेप करना चाहते हैं।

यह निबंध यह भी दर्शाता है कि कैसे ये साहित्यिक-आलोचनात्मक बहसें दलित जनता के साहित्यिक क्षेत्रों में पहचान और प्रतिनिधित्व की पुन: बातचीत की चल रही प्रक्रियाओं को संदर्भित करती हैं, विशेष रूप से लिंग से संबंधित। हिंदी दलित साहित्यिक क्षेत्र में आलोचनात्मक प्रतिवादों की बयानबाजी का यह संक्षिप्त विश्लेषण हमें याद दिलाता है कि विभिन्न सामाजिक

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

समूहों के प्रतिस्पर्धी हितों के लिए अधिवक्ताओं द्वारा जाति, वर्ग और लिंग पहचान को नियमित रूप से दोहराया जाता है।

उन्नीसवीं साठ के दशक और सत्तर के दशक के बाद से लेखकों की बढ़ती संख्या विभिन्न भारतीय राज्यों में दलित समुदायों से साहित्यिक कृतियों का निर्माण किया गया है, जैसे कि कविताएँ, लघु कथाएँ, उपन्यास, नाटक और आत्मकथाएँ जो उनका प्रतिनिधित्व करती हैं जाति आधारित उत्पीड़न, अस्पृश्यता, गरीबी, दमन और क्रांति। उनका लेखन में जाति व्यवस्था की शक्तिशाली निंदा और तीखे हमले भी शामिल हैं

कीवर्ड्स:- दलित साहित्यिक, हिंदी लेखक मुंशी प्रेमचंद, दलित समुदायों, सामाजिक समूहों, हिंदी साहित्यिक |

प्रस्तावना

प्रेमचंद की अधिकांश कहानियों में दलितों की समस्याओं को ग्रामीण जनता की समग्र समस्याओं के हिस्से के रूप में चित्रित किया गया है। प्रेमचंद का अनूठा गुण यह है कि उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ लगातार संघर्ष के बावजूद देश के अन्य विभाजनों की उपेक्षा नहीं की।

यह बताया गया है कि दलित साहित्य है आधुनिक भारतीय साहित्य की एक अनूठी विधा मानी जाती है, जिन परिस्थितियों में वे रहे हैं, साथ ही साथ सीधे तौर पर हिंदुओं के खिलाफ विद्रोह कर रहे हैं संस्था जिसने उन्हें वर्ण व्यवस्था के प्रति उनकी शाश्वत अधीनता प्रदान की है। यह दलित साहित्य का प्रमुख बल है।

जैसा कि पहले कहा गया है, दलित साहित्य सांस्कृतिक संघर्ष से उत्पन्न हुआ है। चूंकि भारत के स्थापित विहित साहित्य में 'दलितों' का शायद ही कोई स्थान हो, दलित लेखक इसे "हिन्दू साहित्य" कहते हैं और इसके आधिपत्य को चुनौती देते हैं। बाबूराव बागुल, शब्दों में "भारत का स्थापित साहित्य हिंदू साहित्य है। लेकिन दलित है साहित्य, जिसमें नए विज्ञान और प्रौद्योगिकी को स्वीकार करने की क्रांतिकारी शक्ति है और कुल परिवर्तन लाना। कुल क्रांति का नाम है 'दलित'; यह है क्रांति अवतार।"

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

दलित साहित्य भी विहित साहित्य को नकारता है। पारंपरिक सौंदर्यशास्त्र वार्ता साहित्य के तीन बुनियादी सिद्धांतों के बारे में, सत्य (सत्य), शिवम (अच्छाई) और सुंदरम (सौंदर्य) का विरोध करना है। इसके विपरीत दलित साहित्य आधारित होना चाहिए वास्तविकता पर और इसके लिए, मनुष्य ईश्वर या राष्ट्र से भी श्रेष्ठ है। इसलिए, जब एक दलित पाठ का मूल्यांकन करता है वह न तो नायक धीरोदत की भरत की अवधारणा को लागू कर सकता है, धीरलित। धीर प्रशांत या धीरुद्दत, न ही वह जगन्नाथ की परिभाषा को लागू कर सकते हैं कविता "वक्यां रसातम्कम कवायं"। दलित साहित्य पश्चिमी सिद्धांतों को खारिज करता है जैसे सिगमंड फ्रायड का मनोविश्लेषण, रोलैंड बार्थ का संरचनावाद या जैक्स डेरिडा का विघटन सिद्धांत, और यह रस और धवनी के भारतीय सिद्धांतों को खारिज करता है। सी बी भारती अपने लेख में, 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' दलित सौंदर्यशास्त्र के बारे में बात करता है।

"दलित साहित्य का उद्देश्य उस स्थापित व्यवस्था का विरोध करना है जो" अन्याय पर आधारित है और उच्च जातियों की बुराई और पाखंड को उजागर करने के लिए है। दलित साहित्य के लिए एक सौंदर्यशास्त्र पर आधारित एक अलग सौंदर्यशास्त्र बनाने की तत्काल आवश्यकता है जीवन के वास्तविक अनुभवों पर।"

आधुनिक हिन्दी - दलित विमर्श

दलित विमर्श जाति आधारित अस्मिता मूलक विमर्श है। इसके केंद्र में दलित जाति के अंतर्गत शामिल मनुष्यों के अनुभवों, कष्टों और संघर्षों को स्वर देने की संगठित कोशिश की गई है। यह एक भारतीय विमर्श है क्योंकि जाति भारतीय समाज की बुनियादी संरचनाओं में से एक है। इस विमर्श ने भारत की अधिकांश भाषाओं में दलित साहित्य को जन्म दिया है। हिंदी में दलित साहित्य के विकास की दृष्टि से बीसवीं सदी के अंतिम दो दशक बहुत महत्वपूर्ण हैं।

परिवेश

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

भारतीय समाज आदिकाल से ही वर्ण व्यवस्था द्वारा नियंत्रित रहा है । जो वर्ण व्यवस्था प्रारंभ में कर्म पर आधारित थी कालान्तर में जाति में परिवर्तित हो गई । वर्ण ने जाति का रूप कैसे धारण कर लिया ? यही विचारणीय प्रश्न है । वर्ण व्यवस्था में गुण व कर्म के आधार पर वर्ण परिवर्तन का प्रावधान था किन्तु जाति के बंधन ने उसे एक ही वर्ण या वर्ग में रहने पर मजबूर कर दिया ।

दलित आंदोलन और वैचारिक आधार

दलित आन्दोलन दलित साहित्य का वैचारिक आधार है डॉ . अंबेडकर का जीवन-संघर्ष ज्योतिबा फुले तथा महात्मा बुद्ध का दर्शन उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि हैं । सभी दलित रचनाकार इस बिन्दु पर एकमत हैं कि ज्योतिबा फुले ने स्वयं क्रियाशील रहकर सामंती मूल्यों और सामाजिक गुलामी के विरोध का स्वर तेज किया था । ब्राह्मणवादी सोच और वर्चस्व के विरोध में उन्होंने आदोलन खड़ा किया था । यही कारण है कि जहाँ दलित रचनाकारों ने ज्योतिबा फुले को अपना विशिष्ट विचारक माना वही डॉ . अंबेडकर को अपना शक्तिपुंज स्वीकार किया ।

डॉ. अंबेडकर ने अनेक स्थलों पर जोर देकर कहा है कि दलितों का उत्थान राष्ट्र का उत्थान है । दलित चिंतन में राष्ट्र पूरे भारतीय परिवार या कौम के रूप में है जबकि ब्राह्मणों के चिंतन में राष्ट्र इस रूप में मौजूद नहीं है । उनके यहाँ एक ऐसे राष्ट्र की परिकल्पना है, जिसमें सिर्फ द्विज हैं । यहाँ न दलित हैं, न पिछड़ी जातियां है और न अल्पसंख्यक वर्ग है । इसलिए हिन्दू राष्ट्र और हिंदू राष्ट्रवाद दोनों खंडित चेतना के रूप में हैं । दूसरे शब्दों में वर्ण व्यवस्था ही हिंदू राष्ट्र का मूलाधार है । इसीलिए कंवल भारती के शब्दों में दलित मुक्ति का प्रश्न राष्ट्रीय मुक्ति का प्रश्न है । करोड़ों लोगों के लिए अलगाववाद का जो समाजशास्त्र और धर्मशास्त्र ब्राह्मणों ने निर्मित किया , उसने राष्ट्रीयता को खंडित किया था और उसी के कारण भारत अपनी स्वाधीनता खो बैठा था । (इसीलिए दलित विमर्श के केंद्र में वे सारे सवाल हैं , जिनका संबंध भेदभाव से है , चाहे ये भेदभाव जाति के आधार पर हो , रंग के आधार पर हो , नस्ल के आधार पर हों , लिंग के आधार पर हों या फिर धर्म के आधार पर ही क्यों न हो ।

दलित आत्मकथाएं

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

दलित विमर्श सबसे प्रखर रूप में दलित आत्मकथाओं के रूप में सामने आया। दलित साहित्यकारों ने अपनी ही कहानी औ्र अपने अनुभव के माध्यम से दलित उत्पीड़न औ्र दलित संघर्ष को रेखांकित किया। ओमप्रकाश बाल्मिकी की जूठन पहली दलित आत्मकथा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी दलितों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए जो एक लंबा संघर्ष करना पड़ा, 'जूठन' इसे गंभीरता से उठाती है। इसमें चित्रित दलितों की वेदना और उनका संघर्ष पाठक की संवेदना से जुड़कर मानवीय संवेदना को जगाने की कोशिश करते हैं। तुलसी राम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' एवं मणिकर्णिका पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण अंचल में शिक्षा के लिए जूझते एक दलित की मार्मिक अभिव्यक्ति है.साथ ही हाल ही के वर्षों में डॉ. श्योराज सिंह 'बेचैन' की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर'प्रकाशित हुई है जिसमें एक दलित बालक के बचपन का गला बहुत ही बेरहमी से घोंटने का प्रयास किया गया, लेकिन लेखक का बाल-मन डरा नहीं जुटा रहा शिक्षा की लड़ाई के लिए।

दलित कहानियाँ

दलित कहानियों में सामाजिक परिवेशगत पीड़ाएं, शोषण के विविध आयाम खुल कर और तर्क संगत रूप से अभिव्यक्त हुए हैं.

- ग्रामीण जीवन में अशिक्षित दलित का जो शोषण होता रहा है, वह किसी भी देश और समाज के लिए गहरी शर्मिंदगी का सबब होना चाहिए था.
- “पच्चीस चौका डेढ़ सौ” कहानी में इसी तरह के शोषण को जब पाठक पढ़ता है, तो वह समाज में व्याप्त शोषण की संस्कृति के प्रति गहरी निराशा से भर उठता है.
- ब्याज पर दिए जाने वाले हिसाब में किस तरह एक सम्पन्न व्यक्ति, एक गरीब दलित को ठगता है और एक झूठ को महिमा-मण्डित करता है, वह पाठक की संवेदना को झकजोर कर रख देता है.

दलित कविताएं

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

दलित साहित्यकारों में से अनेकों ने दलित पीड़ा को कविता की शैली में प्रस्तुत किया। कुछ विद्वान 1914 में 'सरस्वती' पत्रिका में हीराडोम द्वारा लिखित 'अछूत की शिकायत' को पहली दलित कविता मानते हैं। कुछ अन्य विद्वान अछूतानन्द 'हरिहर' को पहला दलित कवि कहते हैं, उनकी कविताएँ 1910 से 1927 तक लिखी गई। उसी श्रेणी मे 40 के दशक में बिहारी लाल हरित ने दलितों की पीड़ा को कविता-बद्ध ही नहीं किया, अपितु अपनी भजन मंडली के साथ दलितों को जाग्रत भी किया । दलितों की दुर्दशा पर बिहारी लाल हरित ने लिखा :

तीन रुपये का जमींदार से ले लिया उधार अनाज,

एक आने का दोस्तों ठहरा लिया था ब्याज ।

दादा का कर्जा पोते से नहीं उतरने पाया,

तीन रुपये में जमींदार ने सत्तर साल कमाया ॥

ओमप्रकाश बाल्मिकी की कविता 'ठाकुर का कुआं ' दलितों की अंतःपीड़ा को उजागर करती है |

चूल्हा मिट्टी का

मिट्टी तालाब की

तालाब ठाकुर का...

20वीं सदी के उत्तर भारत में दलित दावा

20वीं सदी के दौरान, दलित समूहों ने अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए कई तरह की राजनीतिक और विवादास्पद रणनीतियां अपनाई हैं। महाराष्ट्र में, 19वीं शताब्दी के मध्य में, ज्योतिबा फुले के कई साहित्यिक कार्यों और संगठन, सत्यशोधक समाज (या सत्य की तलाश करने वाली सोसायटी) के साथ जाति-विरोधी विरोध शुरू हुआ, और डॉ अम्बेडकर की सक्रियता के साथ 20वीं शताब्दी तक जारी रहा (जाफ़रलॉट 2005) ; ओ'हानलॉन 1985; ओमवेट 1994;

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

ज़ेलियट 2001)। उत्तर में, हालांकि, 19वीं शताब्दी के अंत तक, कई निम्न-जाति समूहों, जिनमें कुछ अछूत जातियों जैसे चमार शामिल थे, ने पहली बार अपनी जाति के इतिहास को फिर से लिखकर अपनी पहचान के बारे में 'राजनीतिक बयान' देना शुरू किया।

आधुनिक दलित विमर्श की उत्पत्ति भारत में

सदियों से भारत में कई बदलाव हुए हैं। पहले, जब भारत में आर्यों का शासन था, प्रजा धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध थी, लेकिन जब मुसलमानों ने भारत पर आक्रमण किया, तो भारत में राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक अंधकार था।

राजनीतिक अधीनता ने भारत के लोगों को कमजोरी, गरीबी, हीन भावना और अन्य विकारों से त्रस्त कर दिया था। पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता का यह साक्षात्कार भारतीय समाज के लिए एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी। कुछ सौ साल पहले मुगल आए थे, लेकिन उन्हें लगभग आत्मसात कर लिया गया था। वे यहां लूट करने आए थे, लेकिन वे धीरे-धीरे डाकू से शासक बन गए और बाद में यहीं रहे।

दलित साहित्य निर्माण और स्वागत की राजनीति

दलित लेखकों को अपनी आवाज उठाने के लिए संघर्ष करना पड़ा है। दलित साहित्य का उत्पादन - अर्थात्, जिस तरह से दलित लेखकों ने अपने काम को प्रकाशित करने और मुख्यधारा की साहित्यिक दुनिया में पहचान हासिल करने के लिए संघर्ष किया है - एक गहन 'राजनीतिक' संघर्ष रहा है, निरंतर बातचीत और टकराव की प्रक्रिया है। यह आश्चर्यजनक नहीं है कि शहरी दलित मध्य वर्गों द्वारा एक दलित साहित्यिक आंदोलन के उदय को मुख्यधारा के हिंदी साहित्य जगत के महत्वपूर्ण विरोध का सामना करना पड़ा है। समकालीन भारत में दलित अनुभव का वर्णन करने वाली इसकी शक्तिशाली आत्मकथाओं ने भारतीय जीवन के प्रमुख साहित्यिक चित्रणों को चुनौती दी है, जबकि दलित साहित्यिक आलोचना को चित्रित करने के इन दलित लेखकों के प्रयासों ने साहित्यिक दुनिया पर जातिवाद का आरोप लगाया है और साहित्यिक हलकों में गरमागरम बहस छेड़ दी है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

निष्कर्ष

प्रेमचंद की कहानियाँ किसी न किसी पारंपरिक भारतीय सामाजिक परंपरा को धता बताती हैं। 'पुनर्जागरण काल' मेरे शोध प्रबंध का विषय है। भारतीय समाज की समस्याओं का पुनर्जागरण काल में भी समाज सुधारकों ने विरोध किया था और प्रेमचंदजी अपने उपन्यासों के माध्यम से उन समाज सुधारकों की मदद कर रहे थे। इसी वजह से प्रेमचंद को 'द सॉल्जर ऑफ द पेन' कहा जाता है।

दोनों क्षेत्रों में हिंदी दलित साहित्य एक ऐसे स्थान के रूप में कार्य करता है जिसमें दलित सार्वजनिक क्षेत्र में भाग लेने की अपनी आकांक्षाओं को व्यक्त कर सकते हैं। मुख्यधारा के हिंदी साहित्य जगत में दलित पहचान और अनुभव के नए प्रतिनिधित्व का योगदान देकर, आत्मकथा के क्षेत्र में हिंदी दलित लेखकों ने एक असहाय पीड़ित के रूप में 'अछूत' की पारंपरिक छवियों का विरोध किया है और इसके बजाय उन्हें राजनीतिक रूप से जागरूक और मुखर दलित की नई छवियों के साथ बदल दिया है।.

सन्दर्भ

1) बेलविंकेल-स्केमप, मारन। 2002. 'कबीर-पंथी इन कानपुर: फ्रॉम सम्प्रदाय टू दलित आइडेंटिटी', मोनिका हॉर्ट्समैन (सं.), इमेजेज ऑफ कबीर में। दिल्लीः मनोहर.

2) 2007. 'भक्ति से बौद्ध धर्म तक: रविदास और अम्बेडकर', आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 42 (23): 2177-83।

3) बेथ, सारा। 2005. 'टेकिंग टू द स्ट्रीट्स: दलित मेला एंड द पब्लिक परफॉर्मेंस ऑफ दलित कल्चरल आइडेंटिटी', कंटेम्परेरी साउथ एशिया, दिसंबर: 397-410।

4) 2010. 'अच्छुतानंद: द जस्टिस ऑफ राम-राज्य', शोबना निझावां (सं.), नेशनलिज्म इन द वर्नाक्यूलर में। दिल्लीः परमानेंट ब्लैक. भाभा, होमी के.

ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

5) 1990. 'परिचय: राष्ट्र का वर्णन', होमी के. भाभा (सं.), राष्ट्र और कथन में। लंदन: रूटलेज. भारती, कंवल. 1996. 'दलित साहित्य और प्रेमचंद', दलित लिबरेशन टुडे, 27 अगस्त।

6) बोस, सुगाता और जलाल, आयशा। 1998. आधुनिक दक्षिण एशिया: इतिहास, संस्कृति, राजनीतिक अर्थव्यवस्था। लंदन: रूटलेज. बॉर्डियू, पियरे। 1984।

7) भेद: स्वाद के निर्णय की एक सामाजिक आलोचना, रिचर्ड नाइस (ट्रांस।)। लंदन: रूटलेज और केगन पॉल।

8) चक्रवर्ती, दीपेश. 2000. 'घरेलू क्रूरता और विषय का जन्म', दीपेश चक्रवर्ती (सं.), प्रोविंशियलाइजिंग यूरोप में। ऑक्सफोर्ड: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

9) चौहान, सूरजपाल. 2001. 'बहारुपिया' (द बफून), जयप्रकाश कर्दम (सं.), दलित साहित्य में। दिल्ली।

10)डालमिया, वसुधा. 1997. हिंदू परंपराओं का राष्ट्रीयकरण: भारतेंदु हरिश्चंद्र और उन्नीसवीं सदी बनारस। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

11)दंगल, अर्जुन (सं.). 1992. पॉइज़न ब्रेड: ट्रांसलेशन्स फ़्रॉम मॉडर्न मराठी दलित लिटरेचर। बॉम्बे: ओरिएंट लॉन्गमैन.

12)दास, भगवान। 1995. 'बाबा साहेब अम्बेडकर कुछ यादें' (बाबा साहेब अम्बेडकर की कुछ यादें), दलित लिबरेशन टुडे, जून 1995।

13)फोककेनफ्लिक, रॉबर्ट (सं.). 1993. आत्मकथा की संस्कृति: आत्म-प्रतिनिधित्व का निर्माण। स्टैनफोर्ड, सीए: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

14)फ्रेजर, नैन्सी। 1992। क्रेग कैलहौं (सं.), हैबरमास एंड द पब्लिक स्फीयर में 'रीथिंकिंग द पब्लिक स्फीयर: ए कंट्रीब्यूशन टू द क्रिटिक ऑफ एक्चुअली एक्जिसस्टिंग डेमोक्रेसी'। कैम्ब्रिज: एमआईटी प्रेस.

15)फ़ीटैग, सैंड्रिया बी. 1991। 'परिचय: औपनिवेशिक दक्षिण एशिया, दक्षिण एशिया में "जनता" के पहलू, 14(1), जून।

16)गुप्ता, नंदिनी। 2001. अर्ली ट्वेंटीथ सेंचुरी इंडिया में शहरी गरीबों की राजनीति। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

17)गोल्ड, विलियम। 2005. हिंदू राष्ट्रवाद और राजनीति की भाषा। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

18)डॉ. सिमा रानी - अस्मितामूलक विमर्श और साहित्य,अक्षर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स,२०१७,पृ.१२

19)डॉ. सिमा रानी - अस्मितामूलक विमर्श और साहित्य,अक्षर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स,२०१७,पृ.१३-१४

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patentor anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification/ Designation/Address of my university/college/institution/Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is

ISSN: 2320-3714
Volume 1 Issue 3
March 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

Harsh Vardhan
Prof. (Dr) Tej Narayan Ojha

******